IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 5.731

Volume 5, Issue 1, May 2021

fgUnw&eqfLye lkSgknZ dk lkekftd Lo:i

M,- mn;Hkku ;kno

vflLVsUV izksQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

प्राचीन काल से ही भारत अपने सामासिक संस्कृति के लिए जाना जाता रहा है। यहाँ पर कई धर्म तथा संस्कृतियों के लोग साथ–साथ रहते आए हैं यही वजह है कि भारत में सामाजिक सौहार्द पहले से विद्यमान रहा है।

भारत अपने यश वैभव के कारण विदेशियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। मध्य एशिया में जब कभी भी राजनैतिक उथल–पुथल होती थी अथवा किसी महत्वकांक्षी विजेता का उदय होता था तो इसका सीधा प्रभाव भारत पर भी पड़ता था। परिणाम स्वरूप समय–समय पर विभिन्न विदेशी जातियों का भारत में आगमन हुआ। भारतीय संस्कृति जो अपनी समन्वय–क्षमता के लिए प्रसिद्ध है, ने अपने में सबको आत्म सात कर लिया। जहाँ तक सौहार्द की बात है तो ''सौहार्द के उपाय प्राचीन काल से इस देश के सतह पर संतो ने तैयार किए है। कबीर नानक, दादू, रैदास जैसे समाज सुधारको ने चौराहे पर खड़ा होकर निर्भीकता पूर्वक सांप्रदायिक सद्भावना का विगुल बजाया है।''[1]

हिन्दुस्तान की साझा संस्कृति में इन भक्ति युगीन संतो का बहुत हाथ रहा है। इसकी रंगीनी को बरकरार रखने के लिए आधुनिक काल के लेखकों ने भी अनेक प्रयास किए है। बहुत हद तक उन्हें सफलता भी मिली है। बहुत हद तक उन्हें सफलता भी मिली है। गद्य के क्षेत्र में कथा– साहित्य का वर्ण्य विषय अनेक पहलुओं से भरा पड़ा है। आजादी के बाद का दौर इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। स्वयं लेखक भी यह स्वीकार करता है कि साहित्यिक कृतियाँ ही अपने गर्भ में उन उपायों को सहेजकर रख सकती हैं, जिनसे सौहार्द के लाखों–लाया उपाय प्रकट होते है।

जहाँ एक ओर साम्प्रदायिक दंगो की विभीषिका देखकर मन विचलित हो जाता है वहीं स्नेह–सद्भाव–सौहार्द के प्रसंगों से रुबरू होकर मन आश्वस्त भी होता है कि सब कुछ खराब नहीं है। कहीं न कहीं कुछ ऐसा है जो देश दुनिया समाज मानवता के हित में प्रयासरत है। ऐसे प्रसंगों से दो चार होकर कुछ वैसा ही एहसास होता है, जैसे बन्द कमरे की उमस भरी गर्मी से बाहर निकलने पर ठंडी हवा का झोका तन–मन शीतल कर देता है।

सौहार्द मानव के अन्तर्गत स्वभावतः होता है परन्तु उसका जन्म आर्थिक विषमता और सामाजिक अन्याय से उत्पन्न होता है प्रभा दीक्षित के शब्दों में ''जब एक समुदाय समझबूझकर धार्मिक, सांस्कृतिक भेदों के आधार पर राजनीतिक माँग रखने का निश्चय करता है तब सामुदायिक चेतना सम्प्रदायवाद के रूप में एक राजनीतिक सिद्धान्त बन जाती है। राजनीतिक स्वापत्तता को तब सांस्कृतिक स्वायत्तता सुरक्षित रखने की अनिवार्य शर्त घोषित कर दिया जाता है। बहु संस्कृतीय समाज में सामाजिक तनाव तथा टकराहट वास्तव में विभिन्न समूहों के बीच चल रहे सत्ता द्वन्द्व के लक्षण है। इस पारम्परिक द्वन्द्व को सैद्धान्तिक स्तर पर धर्म को शिला पर खड़ा करना एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में सम्प्रदायवाद का मूल सार है।''[2]

जहाँ तक हिन्दू–मुस्लिम सौहार्द का अभिप्राय है तो हिन्दू–मुस्लिम एक साथ रहते आए हैं तथा उनके साथ–साथ रहने से कुछ सामाजिक अभिप्राय भी सामने निकलकर आए हैं। इतिहास में भी हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रयास लगतार होते रहे हैं डा० रामधारी सिंह दिनकर के शब्दो में ''जहाँ तक इतिहास का प्रश्न है हमारा ख्याल है, हिन्दू– मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने के लिए इतिहास की घटनाओं पर पर्दा नहीं डाला जा सकता, न ही योज्य है कि हम इस्लाम पर पड़ने वाले हिन्दू प्रभाव अथवा हिन्दुत्व पर पड़ने वाले मुस्लिम प्रभाव को बढ़ा–चढ़ा कर पेश करें। जो बातें जैसी है, इतिहास में उनका वर्णन भी वैसा रहेगा।

1. मंजुला राणा ''दशवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द'' पृ0 126

2. दशवे दशक के हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द– डा0 मंजुला राणा पृ0– 128

Copyright to IJARSCT

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 5, Issue 1, May 2021
Impact Factor: 5.731

मुसलमानों को यह समझना है कि आदमी की धर्म–भक्ति और स्वदेश प्रेम में विरोध नहीं है। अमीर खुसरो, जायसी, अकबर, रहीम और दाराशिकोह मुसलमान भी थे और भारत भक्त भी। हिन्दुओं के इस बात का ज्ञान प्राप्त करना है कि इस्लाम का भी अर्थ शान्ति धर्म ही है। इस धर्म का मौलिक रूप अत्यन्त तेजस्वी था तथा जिन लोगों ने इस्लाम की ओर से भारत पर अत्याचार किए, वे शुद्ध इस्लाम के प्रतिनिधि नहीं या इन अ त्याचारों को हमें भूलना नहीं चाहिए कि उनका कारण ऐतिहासिक परिस्थितियाँ थी जो अब समाप्त हैं और इसलिए भी इन्हें भूले बिना हम देश में एकता स्थापित नहीं कर सकेंगे।''[3]

सदियों से साथ–साथ रहना, उठना–बैठना एक–दूसरे पर एक ऐसा प्रभाव डाल गया कि हिन्दू–मुसलमान को अलग–अलग करके देखना उन पर अत्याचार लगने लगा। दोनों ने होली दीवाली –ईद–मुहर्रम साथ मिलकर मनाए। जहाँ लोगों ने ईट गारे की इमारत के लिए लोगों के मन में कटुता और सन्देह के बीज बो दिए वहीं कुछ लोग ऐसे भी थे कि उन्होंने स्नेह सद्भाव बनाए रखने के लिए पूरे जमाने का विरोध किया। मुसलमान ने जान की बाजी लगाकर मंदिर को नष्ट होने से बचाया। यही समाज में रहते हुए हिन्दू यदि मुस्लमान का ख्याल रखे तथा मुसलमान हिन्दू का ख्याल रखे जिससे कि आपसी समझ और ताल मेल बढ़ता रहे। यही आपसी रहन–सहन में सहयोग की भावना का पैदा होना ही सौहार्द का रूप है।

स्वतंत्र भारत के केन्द्रीयकृत ढॉचे में क्षेत्रीयता के उभार ने अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के बोध को गहरा किया। उस बोध से हिन्दू–मुसलमान सम्बन्धों में तीखे उभार आए। जवाहरलाल नेहरू के धर्मनिरपेक्षता का आश्वासन बहुत प्रभावी न रहा। वह दिन प्रतिदिन बिगड़ता ही गया। 1960 के दशक तक सामाजिक आर्थिक संरचना के असमान विकास ने तथा स्वतंत्र भारत के स्वर्णिम भविष्य के स्वप्न भंग ने असहज स्थिति पैदा की। मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर में 1962 ई0 में भयावह दंगे हुए और हिन्दू – मुसलमान एकता के सूत्र तोड़नें के प्रयास किए गए। जवाहर लाल नेहरू इन दंगों से बेहद व्यथित थे। इन दंगों ने उसी वर्ष चीन से हुए युद्ध ने नेहरू जी के मानवतावादी विचारों को ठेस पहुचाई थी। हिन्दू– मुस्लिम भाई–भाई एवं हिन्दी–चीनी भाई –भाई की अवधारणा देखते–देखते खण्डित हो रही थी।

15 अगस्त –1952 को स्वतंत्रता दिवस के भाषण में उन्होंने देश के सामनें मौजूद खतरों का जिक्र किया उन्होनें कहा साम्प्रदायिकता देश को केवल ज्यादा कमजोर कर सकती है। धार्मिक कट्टरपंथी और साम्प्रदायिक नेताओं ने सबक लेने से इन्कार कर दिया। ''हमें साम्प्रदायिक तत्वों और स्वार्थी लालची लोगों से सतर्क रहना है जो झूँठ और पाखण्ड देश को नुकसान पहुँचाते है। यदि इन तीन चीज को कभी नहीं रोका गया तो हमारे देश को बर्बाद कर देंगे।[4]

स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद पहले दशक की ये आधिकारिक घोषणाएँ दर्शाती हैं, कि स्वातंत्रयोत्तर भारत में साम्प्रदायिकता ने अपना भद्दा सिर उठा लिया था। देश के विभाजन से साम्प्रदायिकता की समस्या सुलझने के बजाय और बढ़ गयी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लगातार दंगे होते रहे। ''सन् 1950 में पं0 बंगाल में गोरा बाजार, दमन आदि में दंगे फैल गए। 1954 में दंगे हुए। 1957 में 58 दंगे पंजीकृत हुए। 1959 में साम्प्रदायिकता की 4 घटनाएँ हुई 1960 में 26 घटनाएँ घटित हुई।''[5]

1962 के जबलपुर के दंगों ने पूरे राष्ट्र को झकझोर दिया। यह आजाद भारत में पहला बड़ा साम्प्रदायिक दंगा था। इसके बाद और भी परिस्थितियाँ आती गयी जिससे हिन्दू–मुस्लिम की दूरियॉ बढ़ती गयीं। सन् 1965 ई0 में पाकिस्तान ने भारत पर फिर से आक्रमण कर दिया। पाक आक्रमण ने हिन्दू – मुसलमान रिश्तों को प्रभावित किया। अवसरवादी राजनीतिज्ञों ने इस आक्रमण को एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण न मानकर धार्मिक आक्रमण बताया। यों भी पाकिस्तानी सरकार अपने आक्रमणों का औचित्य सिंद्ध करने के लिए तथा सैनिकों का उत्साह बढ़ाने एवं पाकिस्तानी जनता के असंतुष्ट मनः स्थिति को

3. रामधारी सिंह दिनकर– संस्कृति के चार अध्याय पृ0– 224
4. द स्टेटसमैन, दिल्ली अगस्त 16, 1952
5. असगर अली इंजीनियर, भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव पृ0– 110

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 5, Issue 1, May 2021
Impact Factor: 5.731

बहकाने के लिए ऐसे तरीके अपनाया करती थी। पाकिस्तानी सरकार इसे जेहाद नाम देती थी जिसे सीधे तौर पर मुसलमानों से सम्बद्ध मान लिया जाता था। लेकिन 1965 ई0 के युद्ध में जब वीर अब्दुल हमीद जैसे मुसलमानों ने भी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो पाकिस्तानी सेवा को परास्त करनें में महती भूमिका निभाई एवं वीरगति को प्राप्त हुए तो इस प्रचार को विराम मिला कि सभी मुसलमान पाकिस्तान के पक्षधर है। और उनकी निष्ठा पाकिस्तान के साथ है। ''जहाँ आजादी के बाद का भारत का समाज और राजनीति धर्म निरपेक्ष रहा है वही सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का तर्क साम्प्रदायिकता के प्रसार के लिए अनुकूल जमींन तैयार करता रहा है।''[6]

1962 में चीन युद्ध के दौरान और 1965 में पाकिस्तान युद्ध के दौरान भी जनसंघ की लोक प्रियता में वृद्धि हुयी, क्योंकि इसको कांग्रेस से ज्यादा लोकप्रिय समझा गया। जनसंघ के नेता काफी आश्वस्त थे कि चीन और पाकिस्तान के प्रति उनके कड़े रवैये से उनको लोकप्रियता हासिल हुई है। जनसंघ के नेताओं के इन दो युद्धों के दौरान राष्ट्रभक्ति की बढ़ी हुई भावनाओं को अपने पक्ष में भुनाया। राष्ट्रीय स्तर पर अधिक सीटें जीत कर इस संगठन ने अपनी महत्वपूर्ण स्थिति बना ली। सितम्बर 1969 में इसी संगठन के प्रोत्साहन पर गुजरात में व्यापक साम्प्रदायिक दंगा हुआ। जनसंघ ने इस दंगे पर जमकर राजनीति की। '' दिसम्बर 1969 में पटना अधिवेशन में 'मुसलमानों का भारतीयकरण' का प्रस्ताव पारित किया। जिसने आगे इस विचार को मजबूत किया कि भारत में रहने वाले मुसलमान सच्चे भारतीय नहीं और इनकी वफादारी भारत से कहीं बाहर हैं।''[7] इस प्रकार देखा जाय तो राजीनतिक स्तर पर भारत को लगातार बाँटने का ही प्रयास किया गया। इससे राजनेताओं को तात्कालिक लाभ पहुँचने लगा।

1969ई0 के अहमदाबाद और गुजरात दंगो के बाद 1970ई0 में भिवंडी और जलगांव में दंगे हुए। जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सहायता एवं उकसाने से शिवसेना ने इन दंगों में मुख्य भूमिका निभाई। इस तरह साठ के दशक के अन्तिम चरण में साम्प्रदायिक हिंसा का घटिया से घटिया जो रूप नजर आया, यह देश में पहले कभी देखने मे नहीं आया। सन् 1971 में भारतीय सेना ने ढाका में प्रवेश किया और पाकिस्तानी सेना को हरा दिया और बंग्लादेश का जन्म हुआ।

धर्म के आधार पर संस्कृति को बाँटने का तर्क इतना बेमानी था, कि इस्लामिक राष्ट्र के रूप में अलग हुआ पाकिस्तान भाषाई एवं सांस्कृतिक भिन्नता के कारण सन् 1971 ई0 में दो भागों में विभाजित हो गया अलगाव वादी आन्दोलन चला रहे पूर्वी पाकिस्तान के जननेता मुजीबउर्रहमान का भारत ने पक्ष लिया और एक भीषण संग्राम के बाद पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।इस विजय ने भारत में फांसीवादी खतरा पैदा किया। ''पाकिस्तान को तोड़ने ओर बांग्लादेश निर्माण में भूमिका के कारण श्रीमती इन्दिरा गॉधी की लोकप्रियता उच्च शिखर पर थी। यहॉ तक कि जनसंघ नेता वाजपेयी ने संसद में उन्हें दुर्गा का अवतार कहा। अब उसकी राजनीतिक हैसियत उतनी ही बुलन्द थी जितनी कि साठ के अन्तिम चरण में बैंको के राष्ट्रीयकरण करने में थी। सामान्यतः भारतीय मुसलमान पाकिस्तान के टूटने पर खुश नही थे, लेकिन उन्होनें अपनी इस नाखुशी को कभी भी व्यक्त नहीं किया और साम्प्रदायिक स्थिति शान्तिपूर्ण बनी रही''[8]

पाकिस्तान का विभाजन एक अलगाववादी मानसिकता छोड़ गया। अलग–अलग विद्वानों के अलग–अलग मत है। ''राही मासूम रजा ने बांग्लादेश के गठन एवं पाकिस्तान के विभाजन को धार्मिक आधार पर किए गए विभाजन का परिणाम माना था। उनको इसका दुःख था कि बांग्लादेश को अलग होने के बाद भारत में विलय कर लेना चाहिए था क्योंकि बांग्लादेश का गठन 47 के विभाजन की असहमति से हुआ था।''[9] इससे हिन्दू –मुसलमान सम्बन्धों की आतंरिक संरचना तनावपूर्ण नियन्त्रण की तुगलकी नीति से सर्वाधिक प्रभावित मुसलमान रहे। 1977 में इन्दिरा गॉधी के हार के पीछे उपरोक्त राजनीति अपने चरम पर

6. रजनी पामदत्त–आजादी के बाद का भारत, पृ0 57
7. असगर अली इंजीनियर – भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव पृ0115
8. असगर अली इंजीनियर – भारत में साम्प्रदायिकता : इतिहास और अनुभव पृ0 115
9. राही मासूम रजा, सिनेमा और संस्कृति , पृ0 124–125

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 5, Issue 1, May 2021
Impact Factor: 5.731

थी। दोनों ही अतिवादी एवं अपने समुदाय के तथा कथित हिमायती संगठन जनसंघ एवं जमात–ए–इस्लामी एक मंच पर आये और सांस्कृतिक अभिन्नता की चर्चा की। जनसंघ ने स्वीकार किया कि उसने मुसलमानों के प्रति गलत धारणा बदल दी है और वे भी सच्चे राष्ट्र भक्त हैं। हिन्दू– मुसलमान सौहार्द का यह स्वर्णिम समय था, लेकिन यह छद्म लम्बे समय तक कायम न रह सका। जनता सरकार के पतन ने इनकी एक जुटता भंग की और वैमनस्यता का दौर पुनः शुरू हुआ। राजीव गॉधी की उदार साम्प्रदायिक नीतियों एवं शहबानों प्रकरण में समान नागरिक संहिता के प्रश्न पर जमकर राजनीति की गई। और राजनीति और गहराती गयी।

जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अत्यधिक प्रभाव के कारण साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक हिंसा में वृद्धि नजर आई। धार्मिक आधार पर जन भावनाओं को उभारने का खेल तब अपने चरम पर था जब 1991 में एक विवादास्पद इमारत को कुछ उपद्रवियों ने तोड़ डाला (बाबरी विध्वंस)। इस प्रकरण से देश व्यापी अराजकता की स्थिति बनी। बाबरी विध्वंस। इस प्रकारण से देशव्यापी अराजकता स्थिति बनी। बाबरी विध्वंस ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दू –मुसलमान द्वन्द की धार को तीखा किया। बीते वर्ष गुजरात हिन्दू –मुसलमान तनाव से गुजरा साम्प्रदायिकता की विभीषिका ने बरसों के सौहार्द को नष्ट कर दिया। गुजरात के दंगे ने उस दूरी को और बढ़ा दिया। यह वह समय है आमतौर भारतीय अपने धर्मों को अलग रखकर साथ–साथ रहना चाहता है तभी राजनीतिज्ञों द्वारा धार्मिक भावनाओं से खेलते हुए ए दंगे करवा दिये जाते हैं जो एक बार फिर हिन्दू –मुसलान को दूर कर देते हैं।

एक तरह से देखा जाय तो साम्प्रदायिकता के प्रति सत्तासीन सरकारों का ढुलमुल रवैया एवं अस्पष्ट नीति इन सम्प्रदायों की राजनीति करने वाले समूहों के लिए पोषण का काम करती रही हैं। विकास के पूँजीवादी तरीके ने आर्थिक असमानता का जो कुचक्र तैयार किया उससे मध्यवर्ग में अस्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा शुरू हुई। विकास की गति जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में धीमी ही रही। कहना न होगा कि मुसलमान समाज में जनसंख्या वृद्धि दर आज भी सर्वाधिक है। यह हमारी सरकारों का ढुलमुल रवैया है। जिसकी वजह से हिन्दू और मुसलमान और दूर होते जा रहे हैं। सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में जो अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा आई उससे स्वतंत्रता के बाद नौकरियों के अवसरों के अचानक बढ़ जाने के बाद भी 1960 के दशक के मध्य तक निम्न मध्यवर्ग में बेरोजगारी बहुत बढ़ गई थी। दिशाहीन शिक्षित युवकों के लिए अवसरों की कमी ने समाज में अराजकता के लिए जमींन पैदा की। कृषि एवं उद्योग क्षेत्र में भी असमानता ने असंतोष का वातावरण बनाया। वास्तव में भारतीय समाज की बुनावट ही कुछ ऐसी है कि छोटे एवं सामान्य कारक भी सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न करने में सफल हो जाते है। कुल मिलाकर यह कहना ज्यादा प्रासंगिक होगा कि सदियों से साथ रहते–रहते हिन्दू– मुसलमान ने तमाम विभिन्नताओं के रहते हुए भी सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे को आत्मसात किया। यही कारण है कि उ0प्र0, बिहार का मुसलमान उ0प्र0, बिहार के हिन्दू से कहीं अधिक साम्य संस्कृति का साझीदार है। न कि बंगाल या पंजाब का मुसलमान। संस्कृति कि अभिन्नता का ही प्रभाव था कि विभाजन के बाद अधिकांश मुसलमानों ने अपनी जड़ों से कटना पसन्द नहीं किया। यह लक्षित किया गया कि पाकिस्तान का चुनाव अभिजात वर्ग के मुसलमानों ने ही अधिकतर किया।

तमाम अभिन्नताओं के बावजूद भी इस समय दे''ा में सारे रीति–रिवाज, परम्पराऍ रूढ़ियाँ एवं रहन सहन के तरीके दोनों समुदायों के लिए सुख में साझीदार बने। आपसी सौहार्द एवं भाईचारे के वातारण को अपने स्वार्थ के कारण अभिजात वर्ग तनावपूर्ण बना देता था। उसके बहकावे में मध्यवर्ग सहज ही आ जाता है और प्रभावित सर्वाधिक रूप से दलित एवं निम्न तबका होता है।

वस्तुतः उपरी संस्तर के लोगों के स्वार्थ का दुष्परिणाम भुगत लेने के बाद निम्नवर्ग पुनः सहज व्यापार में ढल जाता है एवं रिश्ते सामान्य हो जाते हैं। वैसे भी दंगों का क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र नहीं होता है। शहरी या कस्बाई संस्कृति इसके प्रचार–प्रसार के लिए अनुकूल पड़ती है।